

Padma Shri



SHRI VIDYANAND SARAİK

Shri Vidhyanand Saraik is associated with folk literature, folk traditions, folk music in Himachal Pradesh, who has a lot of nostalgic knowledge about it. He is a very comprehensive personality in himself who has sacrificed his whole life for this dying culture. He has been a member of the State Bhasha Kala and Sanskriti Akademi for many decades and has been a member of the Pahari Bhasha Samiti for a long time.

2. Born on 26th June, 1941 in backward area of Sirmaur district, Shri Saraik lost his father in his childhood. At the age of four, he learnt the stage of Karijala and singing of Sirmauri song and dance from Mata Shri. He received education till graduation with difficulty. In 1971, he was awarded the Best Teacher Award by the State Education Department. In 1976, due to the circumstances of the house, he had to leave the teaching job but was involved in the service of culture since childhood.

3. In 1973-74 two books of Shri Saraik of Pahari poetry, 'HareJubte' and 'Chiti Chadar' were published with the help of Akademi. He gave presentation on Guru Ravindnath's novel 'Aankhki Kirkiri ko Aankhe Re Khadkan' on Kariyala style and Karlyala's disguise on the life of Vivekananda and Sangeet Natika on Saibaba and Chodeshwar Loknritya Sanskriti Mandal Sewa in Jammu on Sahibi ji. About 100 Pahari songs written by Shri Saraik on Djosar Devi Mahima, Shirgul Mahima have been sung by many singers. The play Samadhan Jalandhar on Pawari of Jhako Ajba was telecast from Doordarshan.

4. Shri Saraik has written 1000 Pahari songs according to Pahari traditions. Some are published like 'Hare Jubte Chiti Chadar Naale Jhako Re Sur' and some remained unpublished like 16 poetry song collections and Badaltu, Thoda, SinghtuNritya Dev Puja and Pajde are his unpublished Hindi publications. Research books on time and rhythm are documents of folk culture. The Pahari translation of Gita, Matrihari and Gitanjali is also a heritage which is unpublished literature. Harul Hare, Bar, Saka, Pwara, Padwayan, Ramayana, Kanheya, Pajdo, Bharatohavebeen searched and this treasure of our Pahari folk literature has been preserved.

5. Shri Saraik has received dozens of honors at the block district level. At national level, he has received Dr. Ambedkar Dalit Literature Award; National Punjab Kala and Sahitya Akademi Jalghar and Chandra Ghar Bewas National Award at Vedaram Thakur Jayanti Kullu. He was also honoured with the Culture Promoter of the Year Award 2018 by Divya Himachal. In 2018, he was awarded Sangeet Natak Akademi Award for Folk Music.

पद्म श्री



श्री विद्यानन्द सरैक

श्री विद्यानन्द सरैक, हिमाचल प्रदेश में लोक साहित्य, लोक परंपराओं, लोक संगीत से जुड़े हुए हैं। उन्हें इसका बहुत स्मरणीय ज्ञान है। उनका व्यक्तित्व बहुत व्यापक है। उन्होंने इस लुप्त होती संस्कृति के लिए अपना पूरा जीवन बलिदान कर दिया है। वे कई दशकों तक राज्य भाषा कला और संस्कृति अकादमी के सदस्य हैं और लंबे समय तक पहाड़ी भाषा समिति के सदस्य रहे हैं।

2. 26 जून, 1941 को सिरमौर जिले के पिछड़े क्षेत्र में श्री सरैक का जन्म हुआ। बचपन में ही उनके पिता का स्वर्गवास हो गया। चार साल की उम्र में, उन्होंने अपनी माता से करियाला मंचन और सिरमौरी गीत और नृत्य सीखा। उन्होंने कठिनाई से स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की। 1971 में, उन्हें राज्य शिक्षा विभाग द्वारा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 1976 में, घर की परिस्थितियों के कारण, उन्हें शिक्षण कार्य छोड़ना पड़ा, लेकिन वह बचपन से ही सांस्कृतिक कार्यों में लगे रहे।

3. श्री सरैक की 1973-74 में पहाड़ी काव्य की दो पुस्तकें 'हरे जुबो' और 'चिट्टी चादर' प्रकाशित हुई। उन्होंने गुरु रवींद्रनाथ के उपन्यास 'आंखकी किरकिरी' को करियाला शैली में 'आंखे रे खड़कन' के नाम से प्रदर्शित किया और करलाईला भेष में विवेकानंद के जीवन पर प्रस्तुति की तथा साईबाबा पर संगीत नाटिका और जम्मू में चोदेश्वर लोकनृत्य संस्कृति मंडल सेवा में साहिबी जी पर प्रस्तुति दी। जोसर देवी महिमा, शिरगुल महिमा पर श्री सराइक द्वारा लिखे गए लगभग 100 पहाड़ी गीत कई गायकों द्वारा गाए गए हैं। झाको अजबा की पावरी पर नाटक समधन जालंधर दूरदर्शन से प्रसारित किया गया था।

4. श्री सरैक ने पहाड़ी परंपराओं के अनुसार 1000 पहाड़ी गीत लिखे हैं। 'हरे जुबो', 'चिट्टी चादर' 'नाले झाको रे सुर' जैसे कुछ प्रकाशित हुए और कुछ अप्रकाशित रहे जैसे 16 कविता गीत संग्रह और बादलटू, थोडा, सिंघतु नृत्य देव पूजा और पजदे उनके अप्रकाशित हिंदी प्रकाशन हैं। उनकी समय और ताल पर शोध पुस्तकें लोक संस्कृति के दस्तावेज हैं। गीता, मातृहरि और गीतांजलि का पहाड़ी अनुवाद भी एक विरासत है जो अभी अप्रकाशित है। हारुल हरे, बार, शक, पवरा, पड़वायन, रामायण, कन्हेया, पजदो, भारतो की खोज की गई है और हमारे पहाड़ी लोक साहित्य के इस खजाने को संरक्षित किया गया है।

5. श्री सरैक को प्रखंड और जिला स्तर पर दर्जनों सम्मान मिले हैं। राष्ट्रीय स्तर पर उन्हें डॉ. अम्बेडकर दलित साहित्य पुरस्कार; राष्ट्रीय पंजाब कला और साहित्य अकादमी जलघर और वेदारम ठाकुर जयंती कुल्लू में चंद्र घर बेवास राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। दिव्य हिमाचल द्वारा उन्हें कल्चर प्रमोटर ऑफ द ईयर अवार्ड 2018 से भी सम्मानित किया गया था। 2018 में, उन्हें लोक संगीत के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।